6 Murdon Ke Waqiat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 207
Weekly Booklet : 207

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाहकारियां"
की एक फ़स्ल मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

6 मुर्दों के वाक़िआ़त

सफ़्हात 20

- क़ब्र में भयानक काला सांप 05
- परिन्दे ने क़ै की तो उस में से इन्सान निकल पड़ा ! 07
- हौज़ पर उलटा लटका हुवा आदमी 09
- क़ाबील के सियाह कारनामे 10

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

6 मुर्दों के वाक़ेआ़त

येह रिसाला (**6 मुर्दों के वाक़ेआ़त**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "ग़ीबत की तबाह कारियां" के सफ़ह़ा 190 ता 205 से लिया गया है।

6 मुर्दों के वाक़िआत

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह करीम ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला : **"6 मुर्दों के वाक़िआत"** पढ़ या सुन ले उसे रिज़्के ह़लाल खाने और बाल बच्चों को भी ह़लाल खिलाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उस पर जहन्नम की आग ह़राम कर दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह करीम के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्क बार है : "जिस ने मुझ पर सौ (100) मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** करीम उस की दोनों आखों के दरमियान लिख देता है कि ये निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुह़दा के साथ रखेगा।"

(معجم اوسط، 5/252 حدیث:7235)

6 मुर्दों की सन्सनी ख़ेज़ ह़िकायात

लोगों की इ़ब्रत के लिये फ़ौत शुदा मुसल्मानों की बुराई बयान करने में भी शर्अ़न ह़रज नहीं है मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم ने मुसल्मानों को गुनाहों से डराने के लिये किताबों में मरे हुए काफ़िरों के इ़लावा बद मज़्हबों और मुसल्मानों के अ़ज़ाबों के भी तज़्किरे फ़रमाए हैं चुनान्चे इस ज़िम्न में 6 मुर्दों की सन्सनी ख़ेज़ ह़िकायात मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1 आग का कुर्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं **रसूलुल्लाह**

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह बक़ीअ़ में गुज़रा तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उफ़! उफ़! तो मैं ने गुमान किया कि शायद आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा इरादा फ़रमाते हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मुझ से कोई ग़लती हुई ? फ़रमाया : नहीं, बल्कि इस क़ब्र वाले शख़्स को मैं ने बनू फ़ुलां के पास सदक़ा वुसूल करने भेजा था तो इस ने एक चादर बतौ़रे **ख़ियानत** बचा ली थी। आख़िर वैसा ही आग का कुरता इस को पहनाया गया।

(نسائی، 1/150، حدیث:859)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ छुपा हुवा नहीं

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! दर्से इ़ब्रत देने के लिये इस ह़दीसे पाक में फ़ौत शुदा शख़्स के अ़ज़ाबे क़ब्र का ज़िक्र किया गया है। इस रिवायत से येह भी रोज़े रोशन की त़रह़ ज़ाहिर हुवा कि हमारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से **इ़ल्मे ग़ैब** रखते हैं जभी तो क़ब्र में होने वाले अ़ज़ाब के साथ साथ सबबे अ़ज़ाब की भी हाथों हाथ ख़बर इर्शाद फ़रमा दी।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का कितना प्यारा अ़क़ीदा था चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की **ह़दाइक़े बख़्शिश** शरीफ़ का शे'र सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109)

(या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़नायत से अ़र्श आप की गुज़र गाह है और फ़र्श ज़ेरे निगाह है। अल ग़रज़ मलाएका हों या

आ़लमे अरवाह़, काएनात में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पोशीदा हो)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

2 बे दीन की गरदन में सांप

ह़ाफ़िज़ अबू ख़ल्लाल ने "किताब करामातुल औलिया" में अपनी सनद से रिवायत की, कि मुझ से **अ़ब्दुल्लाह** बिन हाशिम ने फ़रमाया : मैं एक मय्यित को नहलाने गया, जब मैं ने उस के जिस्म से कपड़ा खोला तो उस की **गरदन पर सांप लिपटे हुए थे !** मैं ने उन सांपों से कहा कि आप को इस पर मुसल्लत़ किया गया है और हमें इस को ग़ुस्ल देना है, अगर आप इजाज़त दें तो हम इस को ग़ुस्ल दे दें फिर आप अपनी जगह वापस आ जाइये, तो वोह **सांप** हट कर एक कोने में हो गए। जब हम ग़ुस्ले मय्यित से फ़ारिग़ हुए तो वोह अपनी जगह वापस आ गए। येह शख़्स **बे दीनी** (या'नी गुमराही) में मश्हूर था। (شرح الصدور، ص177)

3 गरदन में सांप लिपटा हुवा था

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे एक मय्यित को ग़ुस्ल देने के लिये बुलाया गया, जब मैं ने उस के चेहरे से कपड़ा हटाया तो उस की **गरदन में सांप लिपटा हुवा था,** लोगों ने बताया कि येह सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देता था। (مَعَاذَاللّٰه) (شرح الصدور، ص173)

सह़ाबा के ह़क़ में ख़ुदा से डरो !

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! مَعَاذَاللّٰه सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देना गुनाह, गुनाह, बहुत सख़्त गुनाह, क़त़्ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक

दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"सवानेह़े करबला"** (192 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 31 पर है : ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो ! ! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने इन्हें मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा मेरी मह़ब्बत की वज्ह से मह़बूब रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़ किया वोह मुझ से बुग़्ज़ रखता है, इस लिये उस ने इन से बुग़्ज़ रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक ख़ुदाए पाक को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** पाक को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** पाक उसे गिरिफ़्तार करे।

(ترمذی، 5/463، حدیث:3888)

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुसल्मान को चाहिये कि सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अ़क़ीदत व **मह़ब्बत** को जगह दे। इन की **मह़ब्बत** हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की **मह़ब्बत** है और जो बद नसीब सह़ाबा (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) है। मुसल्मान ऐसे शख़्स के पास न बैठे। (सवानेह़े करबला, स. 31) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

(या'नी अहले सुन्नत का बेड़ा पार है क्यूं कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अत्ह़ार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان कश्ती की त़रह़ हैं)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

4 क़ब्र में भयानक काला सांप

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की ख़िदमत में कुछ लोग हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : हम सफ़रे ह़ज पर निकले हुए हैं, मक़ामे सिफ़ाह़ पर हमारे क़ाफ़िले का आदमी फ़ौत हो गया है। हम ने उस के लिये जब क़ब्र खोदी तो **एक बहुत बड़ा काला सांप बैठा नज़र आया, जिस ने क़ब्र को भर रखा था** उसे छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी वोही सांप नज़र आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में इस गम्भीर मस्अले के ह़ल की ख़ातिर ह़ाज़िर हुए हैं। ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "येह उस की **ख़ियानत** की सज़ा है जिस का वोह मुरतकिब हुवा करता था।" और बैहक़ी के अल्फ़ाज़ येह हैं : ذَاكَ عَمَلُهُ الَّذِیْ كَانَ یَعْمَلُ या'नी "येह उस के अ़मल की सज़ा है जो वोह किया करता था।" आप ह़ज़रात उसे उन दोनों में से किसी एक क़ब्र में दफ़्न कर दीजिये, ख़ुदा की क़सम ! अगर इस दुन्या की सारी ज़मीन भी खोद डालेंगे तब भी हर जगह येही कुछ पाएंगे।" बिल आख़िर हम ने उस को **सांप भरी क़ब्र** में दफ़्ना दिया। वापस आ कर हम ने उस का सामान उस के घर वालों को दे दिया और उस की बेवा से उस के आ'माल के बारे में सुवाल किया तो उस ने बताया : येह खाना बेचता था और उस में से अपने घर वालों के लिये कुछ निकाल लेता था फिर कमी पूरी करने के लिये उस में उतनी ही **मिलावट** कर देता था। (شرح الصدور، ص174، شعب الایمان، 4/334، حدیث:5311)

धोकाबाज़ी जहन्नम से है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! ज़रूरतन इ़ब्रत के लिये मुर्दे की बुराई बयान करना जाइज़ था जभी तो ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने उस मरे हुए ह़ाजी की बुराई बयान फ़रमाई, नीज़ जवाज़ ही के सबब बुलन्द पाया मुह़द्दिसीन ने इस **ह़िकायत** को अपनी अपनी कुतुब में नक़्ल किया । इस ह़िकायत से मिलावट वाला माल धोके से बेचने की तबाहकारी मा'लूम हुई । आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, **''बयानाते अ़त्तारिय्या''** ह़िस्सए अव्वल (480 सफ़ह़ात) के सफ़ह़ा 218 पर है **: अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है **:** जो हमारे साथ धोकाबाज़ी करे वोह हम में से नहीं और मक्र और धोकाबाज़ी जहन्नम में हैं । (معجم کبیر، 10/138، حدیث:10234) एक और मक़ाम पर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तीन अश्ख़ास दाख़िले जन्नत न होंगे (1) धोकाबाज़ (2) बख़ील (3) एह़सान जताने वाला । (ترمذی، 3/388، حدیث:1970)

मिलावट वाला माल बेचने का जाइज़ त़रीक़ा

यहां वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो **मिलावट** वाला माल **धोके से बेचते** हैं अगर मरने के बा'द पकड़ में आ गए तो क्या होगा ! अगर माल **मिलावट** वाला है और गाहक को **मिलावट** वग़ैरा की मिक़्दार बता दी या मिलावट बिल्कुल नुमायां नज़र आ रही है तो ऐसा माल बेचना जाइज़ है जब कि इस में से कुछ छुपाया न गया हो मसलन **मिलावट** की मिक़्दार बताई मगर कम बताई जैसा कि 50 फ़ीसद **मिलावट** थी और 25 फ़ीसद कहा या जितनी **मिलावट** ऊपर से नज़र आ रही हो उस से ज़ियादा नीचे

मिलावट कर रखी हो और वोह ज़ाहिर न करे तो ना जाइज़ है। इसी त़रह़ **धोका** देने के लिये ऊपर उ़म्दा फल और नीचे या बीच में गले सड़े फल रखने वालों और यूं ही दूसरी चीज़ों में **धोका** बाज़ी से काम लेने वालों को इन गुनाहों से बचना चाहिये।

धोकाबाज़ी में नुहूसत है बड़ी याद रख इस की सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

5 परिन्दे ने क़ै की तो उस में से इन्सान निकल पड़ा !

इस्मह अ़ब्बादानी कहते हैं : मैं किसी जंगल में घूम रहा था कि मैं ने एक गिरजा देखा, गिरजा में एक राहिब की ख़ानक़ाह थी उस के अन्दर मौजूद राहिब से मैं ने कहा कि तुम ने इस (वीरान) मक़ाम पर जो सब से अ़जीबो ग़रीब चीज़ देखी हो वोह मुझे बताओ ! तो उस ने बताया : मैं ने एक रोज़ यहां शुतर मुर्ग़ जैसा एक **देव हैकल सफ़ेद परिन्दा** देखा, उस ने उस पथ्थर पर बैठ कर क़ै की, उस में से एक **इन्सानी सर** निकल पड़ा, वोह बराबर क़ै करता रहा और इन्सानी आ'ज़ा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअ़त (या'नी फ़ुरती) के साथ एक दूसरे से जुड़ते रहे यहां तक कि वोह **मुकम्मल आदमी** बन गया ! उस आदमी ने जूं ही उठने की कोशिश की उस **देव हैकल परिन्दे** ने उस के ठोंग मारी और उस को टुकड़े टुकड़े कर दिया, फिर निगल गया। कई रोज़ तक मैं येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखता रहा, मेरा यक़ीन ख़ुदाए पाक की क़ुदरत पर बढ़ गया कि वाक़ेई **अल्लाह** पाक मार कर जिलाने (ज़िन्दा करने) पर क़ादिर है। एक दिन मैं उस **देव**

हैकल परिन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और उस से दरयाफ़्त किया कि ऐ परिन्दे ! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम दे कर कहता हूं जिस ने तुझ को पैदा किया कि अब की बार जब वोह इन्सान मुकम्मल हो जाए तो उस को बाक़ी रहने देना ताकि मैं उस से उस का अ़मल मा'लूम कर सकूं। तो उस परिन्दे ने फ़सीह़ अ़रबी में कहा : "मेरे रब के लिये ही बादशाहत और बक़ा है हर चीज़ फ़ानी है और वोही बाक़ी है मैं उस का एक फ़िरिश्ता हूं और इस शख़्स पर मुसल्लत़ किया गया हूं ताकि इस के गुनाह की सज़ा देता रहूं।" जब क़ै में वोह इन्सान निकला तो मैं ने उस से पूछा : ऐ अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाले इन्सान ! तू कौन है और तेरा क़िस्सा क्या है ? उस ने जवाब दिया : "मैं ह़ज़रते मौलाए काएनात **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का क़ातिल अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने **मुल्जिम** हूं, जब मैं मर चुका तो **अल्लाह** पाक के सामने मेरी रूह़ ह़ाज़िर हुई, उस ने मेरा नामए आ'माल मुझ को दिया जिस में मेरी पैदाइश से ले कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को शहीद करने तक की हर नेकी और बदी लिखी हुई थी। फिर **अल्लाह** पाक ने इस फ़िरिश्ते को हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक मुझे अ़ज़ाब दे।" येह कह कर वोह चुप हो गया और देव हैकल परिन्दे ने उस पर ठोंगें मारीं और उस को निगल गया और चला गया। (شرح الصدور، ص175)

इब्ने मुल्जिम ने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को क्यूं शहीद किया ?

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! देखा आप ने ! मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के क़ातिल का जो कि ख़ारिजी बद दीन व गुमराह था कैसा दर्दनाक अन्जाम हुवा ! वोह बद नसीब क्यूं इतना बड़ा गुनाह करने के लिये आमादा हुवा इस सिल्सिले में ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी

शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने "मुस्तदरक" के ह़वाले से लिखा है कि इब्ने मुल्जिम एक क़ित़ाम नामी ख़ारिजिया औ़रत के इ़श्क़े मजाज़ी में गिरिफ़्तार हो गया था, उस ने शादी के लिये महर में तीन हज़ार दिरहम और ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه के क़त्ल का मुत़ालबा रखा था।

(تاریخ الخلفاء،ص139،مستدرک،4/121،رقم:4744)

अफ़्सोस ! इ़श्क़े मजाज़ी में इब्ने मुल्जिम अन्धा हो गया और उस ने ह़ज़रते मौलाए काएनात, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه जैसी अ़ज़ीम हस्ती को शहीद कर दिया, इस नाबकार को वोह औ़रत तो ख़ाक मिलनी थी हाथों हाथ येह सज़ा मिली कि लोगों ने देखते ही देखते उसे पकड़ लिया, बिल आख़िर उस के बदन के टुकड़े टुकड़े कर के टोकरे में डाल कर आग लगा दी गई और वोह जल कर ख़ाकिस्तर हो गया ! और मरने के बा'द ता क़ियामत जारी रहने वाले इस के लरज़ा ख़ैज़ अ़ज़ाब का अभी आप ने तज़्किरा सुना। वोह बद बख़्त, न इधर का रहा न उधर का रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने बिल्कुल सच फ़रमाया है कि "शह्वत की घड़ी भर के लिये पैरवी त़वील ग़म का बाइ़स बनती है।" (सह़ाबी का क़ौल यहीं तक है) (تاریخ ابن عساکر،47/173) क़ाबील भी तो शह्वत ही की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को शहीद कर के बरबाद हुवा और बरबाद भी कैसा हुवा कि सिर्फ़ सुन कर ही झुरझुरी आ जाए ! तो इस की भी **ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और शह्वत की आफ़त से रब्बुल इ़ज़्ज़त की पनाह मांगिये :

6 हौज़ पर उलटा लटका हुवा आदमी

अ़ब्दुल्लाह कहते हैं : हम चन्द अफ़राद समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए। इत्तिफ़ाक़न चन्द रोज़ तक अंधेरा छाया रहा, जब रोशनी हुई तो एक

बस्ती आ गई। **अ़ब्दुल्लाह** कहते हैं कि मैं पीने के लिये पानी की तलाश में रवाना हुवा तो बस्ती के दरवाज़े बन्द थे, मैं ने बहुत आवाज़ें दीं, कोई जवाब न आया, इसी अस्ना में दो शह सुवार (या'नी दो घोड़े सुवार) नुमूदार हुए, उन्हों ने कहा : ऐ **अ़ब्दुल्लाह**! उस गली में दाख़िल हो जाओ तो तुम्हें पानी का एक हौ़ज़ मिलेगा उस में से पानी ले लेना और वहां के मन्ज़र को देख कर ख़ौ़फ़ज़दा न होना। मैं ने उन से उन बन्द दरवाज़ों के बारे में दरयाफ़्त किया जिन में हवाएं चल रही थीं, उन्हों ने बताया : "येह वोह घर हैं जिन में **मुर्दों** की रूहें रहती हैं।" फिर मैं **हौ़ज़** पर पहुंचा तो मैं ने देखा कि **एक शख़्स पानी पर उलटा लटका हुवा है** वोह अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है, मुझे देख कर पुकारने लगा : ऐ **अ़ब्दुल्लाह**! मुझे पानी पिलाओ। मैं ने बरतन ले कर डुबोया ताकि उसे पानी पिला सकूं लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने उस **लटके हुए आदमी** से कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा! तूने देख लिया कि मैं ने अपनी त़रफ़ से कोशिश की, कि तुझे पानी पिलाऊं लेकिन मेरा हाथ पकड़ा गया, तू मुझे अपना वाक़िआ़ बता। उस ने कहा : मैं ह़ज़रते **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام का लड़का (क़ाबील) हूं, जिस ने दुन्या में सब से पहला क़त्ल किया। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 6/296، رقم:48)

क़ाबील के सियाह कारनामे

ऐ आ़शिक़ाने रसूल! क़ाबील शुरूअ़ में मुसल्मान था बा'द में मुरतद हो गया था, इसी ने दुन्या का सब से पहला क़त्ल किया, इसे दुन्या में येह सज़ाएं मिलीं कि क़त्ल करते ही उस का गोरा रंग सियाही में तब्दील हो गया, दिल एक दम सख़्त हो गया, अपनी बहन इक़्लीमा को अ़दन की त़रफ़ ले कर भाग गया, ह़राम औलाद हुई, जब बुढ्ढा हो गया तो उस की औलाद इस को पथ्थर मारती थी, यहां तक कि अपनी औलाद के पथ्थर

ही से हलाक हो गया। हलाकत के बा'द मिलने वाली सज़ा का लरज़ा ख़ैज़ वाक़िआ़ आप सुन चुके। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **क़ाबील के सियाह कारनामे** बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म न मानना, ना जाइज़ निकाह़ का इरादा करना, हाबील के क़त्ल का इरादा करना, हाबील के क़त्ल के बा'द मुरतद हो जाना, गाना बजाना, बाजे ताशे ईजाद करना। मज़ीद फ़रमाते हैं : मुरतद व बे दीन को नबीज़ादा होना बिल्कुल ही बेकार है, पैग़म्बर ज़ादगी (सिर्फ़) ईमान के साथ मुफ़ीद है, देखो क़ाबील नबीज़ादा था मगर हलाक हो गया। (तफ़्सीरे नईमी, 6/361, 362 माख़ूज़न)

तेरी रह़मतों ही से ईमां मिला है न हो अब येह मुझ से जुदा या इलाही
मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

दर्स में शिर्कत इस्लाह़ का सबब बन गई

ईमान की ह़िफ़ाज़त का जज़्बा पाने, **ग़ीबत** करने सुनने की ख़स्लत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **नेक आ'माल** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **जाएज़ा** के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स, इन्फ़िरादी कोशिश, माहे रमज़ानुल मुबारक में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ की भी बड़ी बरकतें हैं! आइये! इस ज़िम्न में एक **मदनी बहार** आप के गोश

गुज़ार करूं। एक इस्लामी भाई फ़र्स्ट इयर में पढ़ते थे, कॉलेज का आज़ादाना माहौ़ल था, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने का शौक़ जुनून (या'नी पागल पन) की ह़द तक था ह़त्ता कि उस गाड़ी में सफ़र नहीं करते थे जिस में गाने या फ़िल्म न होती ! उन की कॉलोनी में दा'वते इस्लामी के एक इस्लामी भाई तशरीफ़ लाए उन्हों ने **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स दिया और एक दुआ़ याद करवाई। इस से वोह बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हुए, इस के बा'द से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत सुनना शुरूअ़ कर दिया। उन के **दीनी माहौ़ल** से बा क़ाइदा वाबस्तगी की एक बहुत बड़ी वज्ह उन के अ़लाक़े के एक मुबल्लिग़ का हुस्ने अख़्लाक़, आ'ला किरदार, जज़्बए हुस्ने अ़मल और **मह़ब्बत** भरे अन्दाज़ में इन्फ़िरादी कोशिश करना है। اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने माहे **रमज़ानुल मुबारक** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ दस दिन के ए'तिकाफ़ की भी सआ़दत ह़ासिल की। इस का उन पर बड़ा गहरा असर हुवा और वोह गुनाहों से ताइब हो गए **दा'वते इस्लामी की एक "मजलिस"** के निगरान बने और एक डिवीज़न की निगरानी से भी मुशर्रफ़ हुए।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** की बरकत से **दीनी माहौ़ल** की त़रफ़ रग़बत मिली, इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** व शफ़्क़त ने मज़ीद तक़्विय़त बख़्शी और सद करोड़ मरह़बा ! **मदनी माहौ़ल** के अन्दर होने वाले सुन्नतों भरे ए'तिकाफ़े रमज़ान ने गुनाहों की गहरी खाई में गिरे हुए इन्सान को सहारा दे कर निकाला और इतनी ज़बर दस्त अ़ज़मत बख़्शी कि **दा'वते इस्लामी** के बहुत सारे ज़िम्मेदारों का भी ज़िम्मेदार बना दिया। काश ! तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें (ब शुमूल सब के सब छोटे बड़े ज़िम्मेदारान) रोज़ाना **दो दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** देने या सुनने की तरकीब फ़रमा लिया करें।

क़ब्र की रोशनी

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" (1548 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 195 ता 196 पर है : दर्सों बयान के सवाब का भी क्या कहना ! ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूति़श्शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल करते हैं : **अल्लाह** करीम ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्यी फ़रमाई, "भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़शत न हो ।" (حلیۃ الاولیاء،6/5،حدیث:7622)

क़ब्रें जगमगा रही होंगी

इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा । اِنْ شَآءَالله सीखने सिखाने की निय्यत से सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَالله उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ मह़सूस नहीं होगा । अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नेकी की दा'वत देने वालों, **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र और जाएज़ा कर के **नेक आ'माल** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ ब निय्यते सवाब **मुबल्लिग़ीन** की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَالله **ह़ुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी ।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के *जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

दा'वत में ग़ीबत की हिकायत

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ कहीं खाने की दा'वत पर तशरीफ़ ले गए, लोगों ने आपस में कहा कि फ़ुलां शख़्स अभी तक नहीं आया। एक शख़्स बोला : वोह **मोटा तो बड़ा सुस्त** है। इस पर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपने आप को मलामत करते हुए फ़रमाने लगे : अफ़्सोस ! मेरे पेट की वज्ह से मुझ पर येह आफ़त आई है कि मैं एक ऐसी मजलिस (या'नी बैठक) में पहुंच गया जहां एक मुसल्मान की **ग़ीबत** हो रही है। येह कह कर वहां से वापस तशरीफ़ ले गए और (इस सदमे से) तीन (और ब रिवायते दीगर सात) दिन तक खाना न खाया। (تنبیہ الغافلین، ص89)

"ग़ीबत करना गुनाहे कबीरा है" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से किसी को सुस्त वग़ैरा कहने के मुतअ़ल्लिक़ 19 मिसालें

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! देखा आप ने ! **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे मुसल्मान की आबरू रेज़ी बिल्कुल बरदाश्त नहीं करते और ऐसी बैठकों और दा'वतों को भी तर्क कर देते हैं जहां मुसल्मानों की **ग़ीबतों** का सिल्सिला हो। क्या कभी हम भी किसी **ग़ीबतों भरी** दा'वत या बैठक से "वॉक आउट" (या'नी उठ खड़े) हुए ? हां, वहां से उठ कर चल देने से पहले अपनी बात का वज़्न देखना होगा या'नी अगर येह ज़न्ने ग़ालिब हो कि समझाने से **ग़ीबत** करने वाले तौबा कर लेंगे तब तो उन्हें **ग़ीबत** से बाज़ रखना आप पर वाजिब हो जाएगा और अगर ऐसी सूरत नहीं तो जिस त़रह़

मुम्किन हो **ग़ीबत** सुनने से बचिये और अगर फ़ितना व फ़साद का ख़ौफ़ न हो तो वहां से उठ कर चल दीजिये। चूंकि **ग़ीबत** की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं लिहाज़ा समझाने और उठ कर जाने वाले के पास इतना इल्म होना ज़रूरी है जिस से वोह येह तै कर सके कि वाक़ेई गुनाहों भरी **ग़ीबत** हो रही है। इस **हिकायत** से मा'लूम हुवा कि पीठ पीछे किसी को "मोटा" और "सुस्त" कहना भी **ग़ीबत** में दाख़िल है। **मोटा** और **सुस्त** दोनों अलग अलग अल्फ़ाज़ हैं या'नी अगर किसी भारी भरकम आदमी को पीछे से बिला इजाज़ते शरई मोटा कहा तब भी **ग़ीबत** है इसी तरह बिला इजाज़ते शरई पीछे से किसी को ❁ सुस्त ❁ काहिल ❁ नाकारा ❁ ढीला ❁ कामचोर ❁ निकम्मा ❁ निखट्टू ❁ गंवार ❁ जाहिल ❁ अनपढ़ ❁ कम अक़्ल ❁ अहमक़ ❁ बे वुक़ूफ़ ❁ नादान ❁ पगला ❁ बावला ❁ पागल ❁ देर से समझने वाला ❁ मोटी अक़्ल वाला वग़ैरा कहना भी **ग़ीबत** है।

मेरे सर पर इस्यां का बार आह मौला ! बढ़ा जाता है दम बदम या इलाही
ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है येह तेरा ही तो है करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश , स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❁❁❁ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❁❁❁ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दोनों जहां की ज़िल्लत

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़्हा 347 पर फ़रमाते हैं : जो मज़्लूम की दाद रसी पर क़ादिर हो और न करे तो उस के लिये ज़िल्लत

का अ़ज़ाब है। ह़दीस में है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **''जिस शख़्स के सामने उस के मुसल्मान भाई की ग़ीबत की जाए और येह उस की मदद पर क़ादिर हो और न करे, अल्लाह पाक उसे दुन्या व आख़िरत में पकड़ेगा।''** (ذم الغیبۃ لابن ابی الدنیا، 4/388، رقم:108) **मज़ीद** इसी जिल्द के सफ़ह़ा 426 ता 427 पर लिखते हैं : **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **''जिस शख़्स के सामने किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती की जाए और वोह त़ाक़त के बा वुजूद उस की इमदाद न करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उसे लोगों के सामने ज़लीलो रुस्वा करेगा।''**

(مسند امام احمد، 5/412، حدیث:15985)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येह ह़दीसे पाक लिखने के बा'द तह़रीर फ़रमाते हैं : अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुसल्मान की (ग़ीबत वग़ैरा के ज़रीए) बे इ़ज़्ज़ती को देख कर **ख़ामोश रहना** ऐसे (या'नी क़ियामत की रुस्वाई के) अ़ज़ाब का बाइ़स है तो ख़ुद उसे (या'नी किसी मुसल्मान को ग़ीबत वगैरा के ज़रीए) ज़लील करने के दरपै होना और जिस (मन्सब और) मर्तबे की वज्ह से उसे मुसल्मानों के नज़्दीक **इ़ज़्ज़त** ह़ासिल हो उस में (ग़ीबतों, इल्ज़ाम तराशियों और बद गुमानियों वग़ैरा के ज़रीए) रख़्ना अन्दाज़ी (या'नी ख़लल डालने) की कोशिश करना किस क़दर अ़ज़ाब और **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब का सबब होगा ! (फ़तावा रज़विय्या, 24/426, 427)

अल्लाह की दी हुई इ़ज़्ज़त कौन छीन सकता है !

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत ! बयान कर्दा रिवायात और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमूदात (या'नी इर्शादात) से वोह ह़ज़रात इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बिला इजाज़ते शर्ई किसी सुन्नी आ़लिम, पेश्वा, सरबराह

किसी तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार या किसी भी आ़म मुसल्मान के पीछे पड़ जाते हैं। उस को हदफ़े तन्क़ीद बनाते हुए उस की इ़ज़्ज़त उछालने लगते हैं, यूं **ग़ीबतों,** चुग़्लियों, तोह्मतों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों, दिल आज़ारियों और न जाने किन किन गुनाहों के मुरतकिब होते हैं। जिस को **अल्लाह** पाक ने मुअ़ज़्ज़ज़ किया हो उस की **इ़ज़्ज़त** कौन छीन सकता है ! सुनो ! सुनो ! जो बद नसीब बिला वज्हे शर्ई किसी मुसल्मान की मुख़ालफ़त करते उन को बदनाम करते फिरते हैं ऐसों के बारे में क़ुरआने करीम क्या फ़रमाता है चुनान्चे पारह 18 **सूरतुन्नूर** आयत नम्बर 19 में **अल्लाह** पाक का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

मुझे ग़ीबतों से तू महफ़ूज़ फ़रमा पए सरवरे दो जहां या इलाही
जो शाहे मदीना की ना 'तें सुनाए अ़ता कर दे ऐसी ज़बां या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में फ़रमाया

ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के दीनी माहौ़ल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब

ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **नेक आ'माल** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना जाएज़े के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर माह की पहली तारीख़ अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । आइये ''मस्जिद भरो इज्तिमाअ़'' की एक अनोखी मदनी बहार सुनते हैं चुनान्चे اَلْحَمْدُلِلّٰه 10 सितम्बर 2004 बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक **जीलानी मस्जिद** में बा'द नमाज़े इ़शा ''मस्जिद भरो इज्तिमाअ़'' हुवा । मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया और आ़शिकाने रसूल की दीनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़** सितम्बर (2004) में शिर्कत और हाथों हाथ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भरपूर तरग़ीब दिलाई । اَلْحَمْدُلِلّٰه 7 इस्लामी भाई 12 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** के लिये हाथों हाथ तय्यार हो गए । उसी रात उसी गाँव के एक ख़ुश नसीब इस्लामी भाई जो कि **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सोए थे उन को **सरकारे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ख़्वाब** में ज़ियारत हुई, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सलाम** इर्शाद फ़रमाने के बा'द ख़ुद ही अपना तआ़रुफ़ भी करवाया कि मैं **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हूं और जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी था ''तुम्हारे गाँव पर ख़ुसूसी करम हो गया है।'' मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''जो चेहरे पर **दाढ़ी सजाए** उस की मुझ से मह़ब्बत है और जो **दाढ़ी मुंडाए** उस की मुझ से **मह़ब्बत** नहीं और तू रोज़ तहज्जुद की निय्यत करता है मगर सुस्ती कर जाता है, उठ और **तहज्जुद** अदा कर ।'' जब भरे मज्मअ़ में उस इस्लामी भाई ने क़सम खा कर अपना ख़्वाब सुनाया तो सुन कर कई इस्लामी भाइयों ने **चेहरे पर दाढ़ी सजाने** और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र पर जाने की निय्यतें कीं ।

गोठ में गाउं में, धूप में छाउं में सब से कहते रहें, क़ाफ़िले में चलो
जंगलो कोह में, कोह की खोह में दीं के डंके बजें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मस्जिद भरो इज्तिमाअ़ मरहबा !

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! سُبْحٰنَ اللّٰہ ! "मस्जिद भरो इज्तिमाअ़" की बरकतों की भी क्या बात है ! बा'ज़ अवक़ात सियासी त़ौर पर "जेल भरो" तह़रीक चलाई जाती है, **दा'वते इस्लामी** चूंकि सुन्नतों भरी **आ़शिकाने रसूल** की दीनी तह़रीक है येह **मस्जिद भरो** के अ़ज़ाइम रखती है और चाहती है कि बस किसी त़रह़ भी उम्मत का बच्चा बच्चा **नमाज़ी** बन जाए। इस **मदनी बहार** का अहम ह़िस्सा ख़्वाब में मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत और येह पैग़ामे रिसालत है : जो चेहरे पर **दाढ़ी सजाए** उस की मुझ से **मह़ब्बत** है और जो **दाढ़ी मुंडाए** उस की मुझ से मह़ब्बत नहीं। ख़्वाब की इस बात की ताईद इस ह़दीसे पाक से होती है जिस में येह **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फैर ले वोह मेरा नहीं।

(تاریخ ابن عساکر، رقم:4496، 38/127)

दाढ़ी के मुतअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रतनाक ख़्वाब

मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िले** के हमराह मुख़्तलिफ़ शहरों का सफ़र करता हुवा हिन्द के सूबए गुजरात के एक साह़िली शह्र "वेरावल" ह़ाज़िर हुवा, वहां एक क्लीन शेव नौ जवान से मुलाक़ात हुई जिस ने मुझ से कुछ इस त़रह़ ख़्वाब बयान किया : मैं ने देखा, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी के ज़ानू पर सरे अन्वर रख कर लेटे

हुए हैं, क़रीब ही **दा'वते इस्लामी** का एक मुबल्लिग़ हाज़िर है, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से फ़रमाने लगे : (अल्फ़ाज़ याद नहीं मज़मून कुछ इस त़रह़ था) **''मेरे उम्मती दाढ़ी मुंडवाते हैं इस से मेरे सीने में दर्द होता है।''** येह सुन कर उस मुबल्लिग़ ने मुझ क्लीन शेव के चेहरे पर अपने दोनों हाथ फेर दिये और मेरी आंख खुल गई। (ग़ालिबन वोह ख़्वाब ताज़ा तरीन था उस नौ जवान ने मेरे सामने दाढ़ी बढ़ाने के अ़ज़्म का इज़्हार किया)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी सजा लीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस ने अभी तक दाढ़ी नहीं रखी उस को चाहिये कि अपने प्यारे प्यारे मदनी मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी **दाढ़ी शरीफ़** अपने चेहरे पर सजा ले, अब तक मुंडाई या ठोड़ी के नीचे एक मुठ्ठी से घटाई इस से तौबा भी कर ले। शैत़ान लाख रोके दाढ़ी के मुतअ़ल्लिक़ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** का दिल हिला देने वाला रिसाला, **''काले बिच्छू''** (सफ़ह़ात 25) का मुत़ालआ़ कीजिये। नीज़ **मक्तबतुल मदीना** की जारी कर्दा ''काले बिच्छू'' (सफ़ह़ात 25) नामी ऑडियो **कैसेट** सुनिये या V.C.D देखिये।

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है क्यूं इश्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 163)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मक्र और धोके बाज़ी

मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : जो किसी मोमिन को ज़रर (नुक़्सान) पहुंचाए या उस के साथ मक्र और धोके बाज़ी करे वोह मलऊ़न है।

(ترمذی، 3/378، حدیث:1948)

978-969-722-213-1
01082214

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net